Volume-11, No. 2 Aug.-2024, pp. Hin.27-32

स्ववित्पोषित एवं अनुदानित विद्यालयों की छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सबीहा अन्जुम, सहायक प्रोफेसर
प्रभारी बी.एड विभाग,
डी.जी.पी.जी. कॉलेज कानपुर उ.प्र. भारत।

सार–
उपलब्धि कुछ लक्ष्यों की सफल प्राप्ति के लिए एक सामान्य शब्द है, जिसमें एक निश्चित प्रयास की आवश्यकता होती है। यह स्कूली विषयों में अर्जित ज्ञान और कौशल है जो आम तौर पर परीक्षा और परीक्षाओं में प्राप्त अंको द्वारा इंगित किया जाता है। यह उपलब्धि हमारे द्वारा किये गए लगातार प्रयास का प्रतिफल है। उपलब्धि प्रेरणा को उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने की प्रवृति के रूप में परिभाषित किया गया है। इसे उत्कृष्टता के लिए चिंतन के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। व्यक्ति की ओर से उत्कृष्टता के मानक के अनुसार प्रदर्शन करने या प्रतिस्पर्धी स्थिति में सफल होने की इच्छा के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। इस उद्देश्य से प्रभावित व्यक्ति आमतौर पर सक्रिय कार्यों को करने से सुख की प्राप्ति करते है और गुणवत्ता की तलाश करते है उनके मन में एक मानक हो सकता है जिसके साथ वे अपनी तुलना करते रहते है, वे कार्यों को पूर्ण करने का सपना देखते है। उपलब्धि प्रेरणा, उपलब्धि और सीखने के लिए प्रासंगिक हमारे व्यवहार को नियंत्रित करती है। उपलब्धि प्रेरणा की समझ का मानव जीवन के कई पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है, जिसमें यह भी शामिल है कि व्यक्ति कैसे कौशल का विकास करता है और वे मौजूदा कौशल का उपयोग करता है, फलस्वरूप वे हमें उपलब्धि प्रेरणा की प्रकृति और विकास से सम्बंधित महान सैद्धान्तिक व्यवहार महत्व पर ले जाते है।

मुख्य शब्द– उपलब्धि अभिप्रेरणा, परिहार प्रेरणा, सार्वभौमिक प्रेरणा

उपलब्धि अभिप्रेरणा के सिद्धान्त एटकिनसन और मैक्लीलैंडने प्रतिपादित किया। इस सिद्धान्त में एटकिन्सन ने दो प्रेरक बताये है सफलता प्राप्त करने का प्रेरक और असफलता से बचने का प्रेरक उपलब्धि अभिप्रेरणा की अवधारणा–अभिप्रेरणा से सम्बंधित नयी विचार धारा का नाम उपलब्धि अभिप्रेरणा है इसका सर्वप्रथम प्रतिपादन अमेरिका में किया गया। उपलब्धि अभिप्रेरणा की प्रकृति व्यक्तिगत होती है और आधारभूत लक्ष्य उपलब्धि होता है। किसी प्रकार की उपलब्धि के लिए काम को करने की अभिप्रेरणा को उपलब्धि अभिप्रेरणा कहा जाता है अथार्त कठिन कार्यों में निपुणता प्राप्त करने की आशा करना ही उपलब्धि–अभिप्रेरणा है। उपलब्धि अभिप्रेरणा में उपलब्धि द्वारा मान प्राप्त करने का व्यावहारिक प्रयत्न होता है। सफलता भी उपलब्धि का ही एक प्रकार है। उपलब्धि–अभिप्रेरणा के विपरीत भी एक प्रक्रिया है जिसे पलायन अभिप्रेरणा कहते है जिसमें असफलता से दूर भागने की प्रवृति होती है। दोनों प्रकार की अभिप्रेरणा युक्त का विशेष प्रकार का आकांक्षा स्तर होगा। उपलब्धि अभिप्रेरणा की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि ऐसी अभिप्रेरणा से युक्त लोगों का आकांक्षा स्तर बहुत ऊँचा होता है। ऐसे लोग सफलता प्राप्त करके अधिक प्रसन्न होते है। ऐसे लोगों में आगे बढने की कामना, सफलता की इच्छा और सम्बंधित कार्य में अधिक तीव्रता होती है।

एटकिनसन तथा मैक्लीलैंड का उपलब्धि अभिप्रेरणा का सिद्धांत– उपलब्धि अभिप्रेरणा सिद्धांत का प्रतिपादन डेविड सी मैक्लीलैंड ने सन 1961 में किया। इसकी व्याख्या उनकी पुस्तक द एचीविंग सोसाइटी में की गयी है। उनका विश्वास था कि व्यक्ति के मूल विश्वास एवं दृष्टिकोण उसकी उपलब्धि को निश्चित करते है इसलिए भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर में अन्तर होता है।

मानव समय के साथ कदम मिलाकर चलता हुआ प्रगति पथ पर अग्रसर होने का प्रयास करता है सामयिक परिवर्तन का प्रभाव मानव की प्राक्रतिक

क्रियाओं पर भी पड़ता है जिसका अंतिम प्रभाव व्यवस्था पर पड़ता है। प्राचीन काल से व्यक्तित्व के साथ ही उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन व्यक्तित्व के स्वतंत्र पहलु के रूप में किया जाता है– प्रेरणा शब्द लैटिन शब्द मोरेक्स या मोटेम से लिया गया है जिसका अर्थ मोटर का अधिक मोटर है। यह निर्धारित लक्ष्यों की ओर एक कदम है इसलिए प्रेरणा एक बल है जो शिक्षार्थियों के व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है। इस प्रकार उपलब्धि प्रेरणा को उपलब्धि की आवश्यकता के रूप में भी संदर्भित किया जाता है और यह अच्छा करने की इच्छा होती है। यह किसी व्यक्ति के व्यवहार को संदर्भित करता है जो अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए कुछ हासिल करने का प्रयास करता है, दूसरों के प्रदर्शन में श्रेष्ठ होता है। माता पिता की भागीदारी से जन्म से लेकर वयस्कता तक बच्चों की शिक्षा और विकास के हर पहलु में होती है जो शिक्षा में इसके द्वारा प्रदान किए जा सकने वाले कई संभावित लाभों की पुष्टि करने वाला अध्ययन है। वर्तमान सदी को सही मायने में प्रेरणा की सदी कहा गया है। वह बल जो किसी व्यक्ति के कार्यों को प्रेरित या उत्तेजित करता है और उसकी दिशा तय करता है उसे प्रेरणा कहते है। प्रेरणा प्राप्त करने की इच्छा या प्रदर्शन करने की इच्छा है। रीड्राफ्ट (1868) के शब्दों में– प्रेरणा वह है जो किसी व्यक्ति को अन्त या लक्ष्य की और ले जाती है। प्रेरणा एक बहुत जटिल घटना है जो जीव एवं पर्यावरण में संचालित कई चरो से प्रभावित होती है। हमारे समाज में अधिकांश लोग खुद को मुखर करने, कुछ हासिल करने या किसी आकार या रूप में मान्यता प्राप्त करने की बहुत तीव्र इच्छा विकसित करते है। इसे उपलब्धि प्रेरणा कहा गया है। उपलब्धि प्रेरणा उत्कृष्टता के अन्तराष्ट्रीय मानकों को प्राप्त करने के प्रयास से जुडी क्रियाओं और भावनाओं की योजना बनाने की एक क्रिया है। सन्दर्भ में उपलब्धि प्रेरणा को उन सभी क्षेत्रों में व्यक्तिगत दक्षता बनाए रखने और बढानें की प्रवृति के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसमें गुणवत्ता के मानक को बाध्यकारी माना जाता है।

उपलब्धि प्रेरणा पर अब तक कार्य हो चुका है परन्तु आवश्यकता को देखते हुए वह अपर्याप्त है इस आवश्यकता को ध्यान में रख कर उपलब्धि प्रेरणा पर अध्ययन करने हेतु एक लघु प्रयास किया है। प्रस्तुत अध्ययन में स्ववित्पोषित एवं अनुदानित विद्यालयों की छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया है क्योंकि अन्य सभी परिस्थितियां समान होने पर भी उपलब्धि प्रेरणा किसी सीमा तक प्रगति का महत्वपूर्ण कारक है। किसी कार्य की सफलता कुछ सम्बंधित व्यक्तियों के पारस्परिक सहयोग का परिणाम होती है।

इतिहास साक्षी है कि मानव स्वभाव से महत्वाकांक्षी रहा है। प्रत्येक मानव के हृदय में अद्वितीय प्रगति की अभिलाषाएं होती है अपनी इन अभिलाषाओं की पूर्ति हेतु अपने विवेक एवं ढ़ंग से सार्थक प्रयास करता है। जब तक व्यक्ति किसी लक्ष्य तक पहुँचने की प्रबल आवश्यकता का अनुभव नहीं करता तब तक उसका अन्तर्मन् लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उसे प्रेरित नहीं करता क्योंकि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। जब किसी वस्तु की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है तब मानव द्वारा उस वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। बिना प्रेरणा के कोई कार्य संभव नहीं है।

उपलब्धि अभिप्रेरणाः उपलब्धि अभिप्रेरणा एक ऐसी शक्ति है जो किसी कार्य को करने के लिए अंतर्मन में साहसिक प्रवृति एकत्र करने का कार्य करती है जिससे व्यक्ति को सामान्य से अधिक प्रतीत होता है। उपलब्धि के माध्यम से सामाजिक कल्याणार्थ कार्य करता है तथा उसी से उसको व्यक्तिगत संतोष प्राप्त होता है। उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रतिपादन डेविड मैक्लीलैंड ने दिया था। इस सिद्धान्त के अनुसार अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मनुष्य हर प्रकार के चुनौती या कठिन समस्या का सामना कर अपने उपलब्धियों को पा लेता है जैसे दिन रात मेहनत कर एक उत्तम सरकारी नौकरी प्राप्त कर लेता है, छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है। उपलब्धि प्रेरणा उपलब्धि की स्थिति में सफलता प्राप्त करने का प्रयास करने और सफल प्रदर्शन को पूर्ण करने में गर्व महसूस करने की एक सीखी हुई प्रवृति है। यह एक व्यक्ति के व्यवहार को संदर्भित करता है जो कुछ हासिल करने और प्रदर्शन में दुसरो से आगे निकलने का प्रयास करता है। यह कुछ कठिन कार्य करने की इच्छा और प्रवृति को दर्शाता है। उपलब्धि प्रेरणा कुछ अंतिम परिणामों की और निर्देशित होती है जो मुख्य रूप से सफलता प्राप्त करने और असफलताओं से बचने के लिए व्यक्ति की अपनी क्षमता से उत्पन्न होती है, इसलिए यह लक्ष्य उन्मुख और लक्ष्य निर्देशित होती है।

एटकिनसन के शब्दों में–''उपलब्धि प्रेरणा, आकांक्षा, प्रयास और दृढ़ता का महत्वपूर्ण निर्धारक है जब कोई व्यक्ति उम्मीद करता है कि उसके प्रदर्शन का मूल्यांकन उत्कृष्टता के कुछ मानक के सम्बन्ध में किया जाएगा इस तरह व्यवहार को उपलब्धि उन्मुख कहा जाता है।''

मरे (1938) के अनुसार–''उपलब्धि प्रेरणा कुछ अच्छा करने और उत्कृष्टता के कुछ मानकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की गतिविधियों में संलग्न होने के लिए सीखा हुआ सामाजिक उद्देश्य है जिसका लक्ष्य व्यक्तिगत उपलब्धि की आन्तरिक भावना की प्राप्ति है।''

एम.सी. क्लेलैंड (1953) के अनुसार– ''उपलब्धि प्रेरणा कई तरह के लक्ष्यों से जुड़ीं होती है, लेकिन आमतौर पर इसके द्वारा अपनाए गए व्यवहार में ऐसी गतिविधि शामिल होगी जो उत्कृ ष्टता के कुछ मानकों की प्राप्ति की ओर निर्देशित होती है।

उपलब्धि प्रेरणा के क्षेत्रों में किये गए शोधो ने पर्याप्त रूप से प्रदर्शित किया है कि यह उद्देश्य विभिन्न स्थितियों में व्यक्तिगत और समूह व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आलम (1992) ने देखा कि उपलब्धि प्रेरणा की मात्रा सामाजिक–आर्थिक स्थिति के स्तर और संस्कृति के प्रकार के साथ बदलती रहती है, यानीं मजबूत उपलब्धि प्रेरणा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति से जुड़ीं होती है।

अवधिया और सिंह (1997) ने बताया कि जिन लोगों में उपलब्धि प्रेरणा का उच्च स्तर होता है, वे नौकरी नीति के आरक्षण के पक्ष में अपनी अनिच्छा दिखाते है।

उपलब्धि प्रेरणा की परिभाषाएं मैकेंनिसन द्वारा उपलब्धि प्रेरणा को उन सभी गतिविधियों में अपनी क्षमताओं को यथासंभव उच्च रखने या बढाने के प्रयास के रूप में परिभाषित किया गया है जिनमें उत्कृष्टता के एक मानक को लागू करने हेतु सोचा जाता है और जहाँ ऐसी गतिविधियों का निष्पादन सफल या असफल हो सकता है। जैसे कि मैकेंनिसन ने बताया है, उत्कृष्टता के मानक को संबंधित लिया जा सकता है, व्यक्ति ने अपने प्रदर्शन के परिणामस्वरूप पूर्णता की एक उच्च डिग्री प्राप्त करने की कोशिश की, जब यह स्वयं से संबंधित होता है ,तो व्यक्ति अपनी उपलब्धि की तुलना दूसरों के साथ करता है। वह आगे बताता है कि क्या उत्कृष्टता का मानक कार्य से सम्बंधित है, स्वयं से सम्बंधित है और अन्य से सम्बंधित है, यह दो भागों में विफलता का डर और सफलता की आशा है। हाँवेस ने बताया कि उपलब्धि प्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक आवश्यकता और ऊर्जावान प्रेरणा है जो किसी व्यक्ति को लक्ष्य या लक्ष्यों की सफल पूर्ति के द्वारा अपने पर्यावरण पर नियंत्रण पाने के लिए प्रयास करने और काम करने के लिए प्रेरित करती है, साथ ही संतुष्टि और आत्म–मूल्य की भावना भी होती है, जिसे उपलब्धि की आवश्यकता भी कहा जाता है। हेस ने उपलब्धि प्रेरणा को विफलता से बचने के लिए मूल्यवान लक्ष्यों को पूरा करने की प्रेरणा के रूप में माना ,इस अवधारणा ने महत्व् प्राप्त किया क्योंकि प्रेरणा सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक प्रेरणाओ से कम प्रभावित होता है। डिंकमेयर ने टिप्पणी की कि ''बच्चे की उपलब्धि जो सामाजिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, वह उपलब्धि प्रेरणा की सापेक्ष मात्रा है।'' इस प्रकार उपलब्धि प्रेरणा बेहतर करने की इच्छा है, उत्कृष्टता के मानक को पूरा करने के लिए अद्वितीय उपलब्धि हासिल करना और दीर्घकालिक उपलब्धि लक्ष्यों के साथ खुद को शामिल करना। यह एक लक्ष्य निर्देशित व्यवहार है और यह आत्मविश्वास का पर्याय है और यह किसी व्यक्ति के प्रदर्शन के निर्दिष्ट स्तर पर किसी कार्य को करने की उसकी क्षमता के बारे में निर्णय को संदर्भित करता है। उपलब्धि प्रेरणा के प्रकार उपलब्धियाँ अन्तर्निहित स्पष्ट तुलना और टालने के उद्देश्यों के कारणहोती है। मनुष्य जो चीजे विशेष रूप से करते है, वे क्यों करते है, सफलता के लिए प्रेरणा क्या बनाती है, यह दशकों से मनोवैज्ञानिक जांच का विषय रहा है। आम सहमति यह है कि हर कोई हासिल करने के लिए प्रेरित होता है, हालाँकि अलग दृअलग कारणों से द्य इन कारणों को सामूहिक रूप से उपलब्धि प्रेरणा कहा जाता है और ये रोजमर्रा की क्रियाओं जैसे काम करना, कोई खेल या रुचि का अभ्यास करना, किसी परीक्षा की तैयारी करना, कॉलेज जाना और यहाँ तक कि खरीदारी को भी सीधे प्रभावित करते है।

उपलब्धि प्रेरणा के विभिन्न प्रकार है–

- आंतरिक प्रेरणा– व्यक्ति आमतौर पर आंतरिक उद्देश्यों से प्रभावित होते है, जो अच्छा प्रदर्शन करने की इच्छा के आधार पर भीतर से आते है और ऐसे प्रोत्साहन के आधार पर होते हैं।
- बाह्य प्रेरणा– बाह्य उद्देश्य सामान्य है व्यक्ति के बाहर से आते है–बहुत बार वे अपने स्वयं के बजाय समाज के मानक को पूर्ण करने की इच्छा का परिणाम होते है।

- **परिहार प्रेरणा–** परिहार एक प्रकार की प्रेरणा है जिससे कुछ लोग पहचान सकते है। यह उबाऊ, रटे रटाए या अप्रिय कार्यों के प्रदर्शन के बदले में स्थिरता और पुर्वानुमयेता प्रदान करता है। परिहार व्यक्तियों को अप्रिय परिणामों से बचने के लिए ऐसे कार्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। हालाँकि, इन कार्यों को करने से व्यक्ति की समग्र स्थिति में सुधार हो सकता है।
- **सार्वभौमिक प्रेरणा**– हासिल करने की आवश्यकता मानवीय स्थिति का हिस्सा है। व्यक्तित्व और आत्म–सम्मान जैसे कारकों के आधार पर उपलब्धि को प्रेरित करने वाली चीजें हर व्यक्ति में अलग–अलग होती है। 2005 में लास एंगल्स बिजनस जर्नल के मैथ्यू वेलेर ने लिखा था कि ''सार्वभौमिक प्रेरणा में प्रोत्साहन, इच्छा, अनुकूल वातावरण और पहले से मौजूद आंतरिक प्रेरणा शामिल है। जब ऐसी स्थिति मौजूद हो, तो उपलब्धि अधिक आकर्षक लगने लगती है'' जिसके परिणामस्वरूप सफल होने वाले की और से अधिक प्रयास किये जाते है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है–

- छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
- स्ववित्पोषित विद्यालयों की छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
- संस्थागत विद्यालयों की छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
- स्ववित्पोषित एवं संस्थागत की छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की सीमाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएँ निम्नलिखित है–

1. प्रस्तुत शोध कार्य कानपुर नगर में स्थित स्ववित्पोषित एवं संस्थागत विधालयों तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक कक्षा की विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं को शामिल किया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य कानपुर नगर के स्ववित्पोषित एवं संस्थागत विधालयों की विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं तक ही सीमित है।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना–

स्ववित्पोषित एवं संस्थागत छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई अंतर नहीं हैं–

अध्ययन किये जाने वाले चर–

- **स्वतंत्र चर**
- **लिंग–छात्राएं**
- **आश्रित चर**

उपलब्धि प्रेरणा उपकरण का चयन

वर्तमान अध्ययन में डेटा के संग्रह के लिए नियोजित उपकरण–"डॉ डी गोपाल राव द्वारा राव उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण"।

न्यादर्श का चयन

समस्या के महत्व् को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन हेतु कानपुर नगर के दो स्ववित्पोषित एवं संस्थागत महाविद्यालयों की स्नातक कक्षा की विज्ञान एवं कला वर्ग की 200 छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा के अध्ययन हेतु चयन किया जिसमें 100 छात्राएं स्ववित्पोषित एवं 100 छात्राएं थी। संस्थागत महाविद्यालय की शोधकर्ता को उपलब्ध उपकरणों में से चयन करना होता है जो परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए डेटा प्रदान करेगा। कुछ मामलों में वह पा सकता है कि मौजूदा शोध उपकरण उसके अनुकूल नहीं है। **"राव उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण"–** डॉ. डी. गोपाल राव द्वारा निर्मित और मानकीकृत किया गया है। परीक्षण हिंदी में है। यह दोनों लिंगों के विधार्थियों के लिए उपयुक्त है। परीक्षण में 20 अधूरे वाक्य है, जिनमें से प्रत्येक के बाद दो संभावित विकल्प अ और ब है,जिनमें से एक उपलब्धि से सम्बंधित आइटम है। यद्यपि दोनों विकल्प उपलब्धि उन्मुख और सामाजिक रूप से स्वीकार है, फिर भी उनमें से एक उपलब्धि और उत्कृष्टता की उच्च भावना को दर्शाता है। छात्रा को विकल्प बताना होगा, जिसे वह आमतौर पर पसंद करती है। आमतौर पर परीक्षण को पूर्ण करने में 8–10 मिनट लगते है। परीक्षण की विश्वसनीयता 0.79 पाई गयी और वैधता 0.25 थी।

उपयोग किये गए उपकरण का प्रशासन

अध्ययन में उपयोग किये जाने वाले नमूने और उपकरण को तय करने के बाद अगला कदम था कि वांछित डेटा एकत्र करने के लिए उसे कैसे प्रशासित किया जाए। वर्तमान अध्ययन में कानपुर जिले के 2 स्ववित्पोषित एवं 2 संस्थागत महाविद्यालयों का चयन किया। अध्ययन कर्ता ने डेटा संग्रह के लिए व्यक्तिगत रूप से विद्यालयों का दौरा किया। इसका उद्देश्य अध्ययन कर्ता की व्यक्तिगत उपस्थिति थी जो लोगों की जिज्ञासा को संतुष्ट करेगी और विश्वसनीय प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए छात्राओं को अध्ययन के

उद्देश्य को भी समझाया जा सकेगा। अध्ययन कर्ता ने उल्लिखित विद्यालयों के प्रधानाचार्य से संपर्क किया और उन्हें जांच का उद्देश्य समझाया। प्रशासन के दौरान छात्राओं की धोखाधडी की आदतों को नियंत्रण करने या कम करने के लिए कदम उठाए गए। छात्राओं को आश्वासन दिया गया कि उनके उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे, इसलिए उन्हें सवालों के सही उत्तर देने में यथासंभव ईमानदार और निष्ठावान होने का प्रयास करना चाहिए। छात्राओं को अपना नाम डेटा, अनुक्रमांक लिखने को कहा गया जो उन्हें दी गयी प्रश्नावली में कक्षा संकाय एवं विधालय का नाम लिखने का कहा गया। परीक्षण प्रारंभ करने से पहले उन्हें अपने संदेह दूर करने की सलाह दी गई। डेटा एकत्र होने के पश्चात अध्ययन कर्ता ने संग्रह से जुडी छात्राओं एवं शिक्षिकाओं को धन्यवाद दिया।

राव उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण की स्कोरिंग परीक्षण लेखक द्वारा तैयार की गई स्कोरिंग–कुंजी की मदद से किया गया है। जी.ए.आर प्रतिक्रियाओं को एक स्कोर मिलता है और एच.ए.आर. प्रतिक्रियाओं को तीन का स्कोर मिलता है। आंकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या सारणी बद्ध आंकड़ों का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक उन्हें महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचाने के लिए कुछ परिष्कृत सांख्यिकीय तकनीक द्वारा विश्लेषण और व्याख्या नहीं की जाती है। वैध निष्कर्ष निकालने के लिए सारणीबद्ध आंकड़ों का व्यवस्थित और वैज्ञानिक उपचार बहुत आवश्यक है द्य इसलिये डेटा के संग्रह और सारणीकरण के बाद, इसे उचित तरीके से संसाधित और विश्लेषण किया जाना चाहिए। अनुसन्धान की कुल प्रक्रिया में व्याख्या सबसे महत्वपूर्ण कदम है। आंकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या भविष्य के शोधकर्ताओं को आवश्यक श्रम से बचने के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीक के साथ कुछ समस्या या संबंधित समस्या पर हमला करने में मदद करती हैं। सांख्यिकीय तकनीक का चयन आंकड़ों के विश्लेषण के लिए विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

समस्त उच्च तथा सामान्य स्तरीय छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा के फलां को का सारणीयन करके अलग–अलग समूहों का मध्य मानप्रामाणिक विचलन तथा आलोचनात्मक अनुपात की गणना की गई है।

सूत्र–

1. मध्य मानडमंद = AM + ¼∑fd½ / N X i
2. प्रामाणिक विचलन = S.D¾ i + √ ¼∑f d½2 /N
3. आलोचनात्मक अनुपात = CR¾ (M1&M2 /SED)

प्रदत्तों का विश्लेषण

शोध कार्य को सफल बनाने के लिए विचाराधीन जनसंख्या के कुछ आंकड़े प्रदत्त संकलित किए जाते है फिर प्रदत्त का सांख्यिकीय विधि द्वारा गणना की जाती है। गणना के विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त होते है। उपलब्धि प्रेरणा के मापन के लिए डॉ. गोपाल राव द्वारा निर्मित प्रमापीकृत परीक्षण प्रयोग किया गया है। न्यादर्श से प्राप्त आंकड़ों को सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में स्ववित्पोषित एवं संस्थागत छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में सह संबंध ज्ञात किया गया है।

सारणी संख्या–1 न्यादर्श का विवरण

संस्था का नाम	स्ववित्तपोषित विद्यालय	संस्थागत विद्यालय	कुल योग
जुहारी देवी महाविद्यालय	1	1	100
डी0जी0पी0जी0 महाविद्यालय	1	1	100
		कुल	200

सारणी संख्या–2

वर्गान्तर	26–30	31–35	36–40	41–45	46–50	51–55	56–60
स्ववित्पोषित (100)	1	9	7	30	15	28	10
संस्थागत (100)	1	3	5	27	20	31	13

सारणी संख्या–3

समूह	मध्यमान	प्रमाणित विचलन
स्ववित्तपोषित	46.65	7.40
संस्थागत	48.35	6.59

सारणी संख्या–4

स्ववित्पोषित एवं संस्थागत छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	आलोचनात्मक परिणाम
स्ववित्तपोषित	100	46.65	7.40	1.79 (असार्थक)
संस्थागत	100	48.35	6.59	

प्राप्त परिणाम से ज्ञात होता है कि स्ववित्पोषित एवं संस्थागत छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है अतः परिकल्पना मान्य है। इन तथ्यों से प्रेरित होकर अध्ययन कर्ता ने छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा पर विद्यालय के प्रभाव का अध्ययन किया तथा निम्न निष्कर्ष निकला।

1. स्ववित्पोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. स्ववित्पोषित एवं संस्थागत विद्यालयों की छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में कोई अन्तर नहीं है क्योंकि उनकी विचारधाराओं तथा परिस्तिथिओं में काफी सीमा तक समानता है। समाज के बदले हुए सामाजिक परिवेश में स्ववित्पोषित एवं संस्थागत विधालयों की छात्राओं को समान शिक्षा वातावरण व् स्वतंत्रता प्राप्त है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि स्ववित्पोषित एवं संस्थागत विधालयों की छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अध्ययन कर्ता ने अध्ययन को सफल बनाने का भरसक प्रयास किया तथा भविष्य के अध्ययन के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित है।

1. नगर एवं ग्रामीण छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन किया जा सकता है।

2. विभिन्न पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का उपलब्धि प्रेरणा पर अध्ययन किया जा सकता है।

3. व्यावसायिक प्रशिक्षण में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कौर टी और मंजू लता (2007)– किशोरियों में उपलब्धि प्रेरणा ,आत्मविश्वास और दृढ़ता के स्तर का अध्ययन इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री – एजुकेशन खंड–38 संख्या 2 पृष्ठ 166–169
2. बीच एट.अल (2011)– किशोरों के समायोजन और उपलब्धि प्रेरणा पर आभाव का प्रभाव–एशियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी– एजुकेशन खण्ड 44, संख्या 1–2 ,पृष्ठ 29–37
3. पाण्डेय राम शकल– शिक्षा मनोविज्ञान राखी प्रकाशन आगरा
4. पाण्डेय के. पी.– शैक्षिक अनुसन्धान राखी प्रकाशन आगरा
5. बोर्ड डब्लू. आर.– आधारभूत व्यावहारिक अनुसन्धान ओमेगा प्रकाशन न्यू दिल्ली
6. उपाध्याय राधावल्लभ एवं वर्मा डॉ .रामपाल सिंह कोचर एस .के. माध्यमिक विधालयों में शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
7. गैरेट, हेनरी ई.– स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन